"ईमारत"

ए. एस. बलगोर
दिनांक: 5. 4. 89

जब हम ईमारत का नाम लेते हैं तो एक दम हमारीआँखों के सामने, ताजमहल, कुतुब मीनार, हवामहल, ईफल टावर तथा लाल किला जैसी सुन्दर ईमारतें आ जाती हैं। इन ईमारतों को बनाने में बहुत सारा धन खर्च हुआ था। बहुत से कारीगर लोगों ने मिल कर काम किया और नये-नये ख्यालों का इस्तेमाल किया था। ताजमहल जैसी सुन्दर ईमारत को बनाने में करीब 20-25 वर्षों का समय लगा। इसलिये हम सब इस सुन्दर ईमारत को देखने के लिये आगरा जाते हैं और उसको देखने के बाद उसकी सराहना करते हैं।

जैसे एक सुन्दर ईमारत को बनाने में बहुत मेहनत करनी पड़ती है वैसे ही एक बच्चे को अच्छा इन्सान बनाने के लिये माँ-बाप को बहुत ही परिश्रम करनी पड़ती है। कोई भी बच्चा बचपन में मूर्ख या निकम्मा नहीं होता। उसको अच्छा बनाने में उसके माँ-बाप, संगत अध्यापक, अच्छी पुस्तकें उसका साथ देती हैं।

यह जरूरी नहीं कि जो ईमारत बाहर से देखने में सुन्दर लगे वह ~~सुन्दर~~ अन्दर से भी आकर्षक हो। जिस ईमारत की नींव कमजोर होगी वह थोड़ा सा भूचाल आने पर एक दम नीचे गिर जायेगी।

जिन बच्चों को आदतें व कार्य बचपन से ही ठीक होते है या जिनकी देख-रेख ठीक ढंग से की जाती है वही बड़े होकर रानी झांसी, शिवाजी, राणा प्रताप, फतेह सिंह और जुझार सिंह के समान बनते हैं।

एक सुन्दर ईमारत एक ही दिन में जमीन पर गिरा कर खराब की जा सकती है। अगर किसी ईमारत की देख-रेख ठीक ढंग से न की जाये वह ईमारत भी धीरे-धीरे खराब हो कर नष्ट हो जाती है। ऐसे ही कोई भी बच्चा या व्यक्ति बेकार व बुरा बन सकता है यदि उसके दिमाग को हमेशा सही रास्ते पर लगाकर न रखा जाये।

हममें एक अच्छी ईमारत की तरह एक अच्छा मनुष्य बनने की कामना होनी चाहिये।